आलू

12 अक्टूबर 2019

, , , , - , , - , - — , ,

— , , , " " : , -, , , , , ,

- — , - , —

— — , , - -, - - - " " , — - ,

> "हम एक भ्रामक दृष्टि में थे। कहते थे कि कम्पनी का बीज बेहतर है। मशीन का प्रयोग आरंभ किया, स्थानीय बीजों से उत्पादकता में विस्फोट हुआ।"

:

: : — , , , , - - : ,

- , — , - - - , ; , — , , - : — , - , - , : —

अनेस वार्दा की 2000 की चलचित्र " " इस चर्चा में प्रवेश करती है। वार्दा ने उन बहिष्कृत लोगों को देखा जो फसल कटने के बाद खेत में बचे अनगढ़ उत्पादों को बीनते हैं — - की 1857 की "बीनने वालों" की पेण्टिंग से प्रेरित होकर। हृदय-आकार के आलू वार्दा के हस्ताक्षर बन गए: व्यवस्था के बाहर पड़े, दो छोरों से बढ़ते, भिन्न जीवन-रूपों का रूपक। वार्दा स्वयं भी अनगढ़ थीं: अधिक उम्र में समकालीन कला में आयीं, "इस उम्र में प्रदर्शनी देखने कौन आएगा" कहकर वेनिस-बिएनाले में आलू की पोशाक में पहुँचीं, "" नाम का अपना संस्थापन प्रदर्शित किया। 2019 में वार्दा की मृत्यु के बाद उनकी समाधि पर फूलों के स्थान पर हृदय-आकार के आलू रखे जाते हैं — एक कलाकार की विरासत एक कन्द-पौधे के माध्यम से जीती है।

> "आलू की ओर देखते हैं, कहते हैं कि कुष्ठ-रोग लाता है। बाइबल में भी नहीं आता। ऊपर से ज़मीन के नीचे उगता है — सन्देहास्पद। पर अकाल आ जाता है, तो और कोई उपाय नहीं रहता।"

-

— - - - : , — : (-), , - - - — ? - , " "

- , , : — , -, , " " , - : , , — - : , — , , " , " : - - -

> "यदि हम जलवायु-परिवर्तन की बात करने वाले हैं, तो इस पक्ष की भी बात अवश्य करनी होगी। आलू ने विश्व-इतिहास बदल दिया — टिकाऊ, मासूम-सा दिखता, पर हमारे जीवन को बदलने को तत्पर एक सत्ता।"

एक स्वर "" की संकल्पना का स्मरण कराता है: नहीं, पूँजीवाद से उत्पन्न एक युग। आलू को उपनिवेशवाद से, उपनिवेशवाद को औद्योगिक कृषि से, औद्योगिक कृषि को जलवायु-संकट से जोड़ती शृंखला ठीक उसी संकल्पना के भीतर है।

:

: - - — , , " ? ," : , - — - "" , -

> "प्रवास को उभारने वाली बात आर्थिक प्रतीत होती है, पर उसके नीचे का मूल कारण सामाजिक जीवन की दुर्बलता है। अपनेपन की भावना की दुर्बलता है।"

- — - , "" , , "- " - - : , — - — , : 1950 - " " ,

– , , : " - , , , "-: , - , , - ,

2005 - : - — - : " , - " , , – -

:

दो प्रदर्शन आलू के काव्यमय आयाम को खोलते हैं। एक सामूहिक के तीन सदस्य तीन भिन्न नगरों में एक-दूसरे से स्वतन्त्र पाठ रचे, चलचित्र बनाए — एक-दूसरे में हस्तक्षेप किए बिना, एक-दूसरे की भावना पर विश्वास करते हुए एक स्थान पर लाए। तरबूज पर किए गए पूर्व-सामूहिक कार्य का यह सिलसिला है: एक फल या सब्ज़ी को रूपक और यथार्थ दोनों रूपों में बुनना। ज़मीन के नीचे और ऊपर, जड़ और तारा, बीज और रूपान्तरण आपस में बुन जाते हैं: "आलू तारा भी हैं और पौधा भी। पौधे जड़ भी हैं और जीव भी।" से एक चेतावनी आती है:
"वंश-वृक्ष बहुत शाखाएँ बना चुका है। ज़मीन के ऊपर तुम जो जीवन जीते हो, क्या वह ज़मीन के नीचे के तारों को पाने के समानुपात में है?"

> "बढ़ते हुए विलोप नहीं होना चाहिए। तपते हुए हार नहीं माननी चाहिए। मरना हो तो तारों की भाँति मिरें। एक सुपरनोवा की शान से।"

दूसरा प्रदर्शन — चार-व्यक्ति का दल — आलू के इर्द-गिर्द कहानियाँ रचता है: गृहिणी परिवार की सेवा करती है, सैनिक राज्य की सेवा करता है और आलू छीलने का दण्ड भोगता है, पोप धर्म की सेवा करता है और आलू पर प्रतिबंध लगाता है। हर पात्र सेवा-सम्बन्ध का अंश है, हर एक के मध्य आलू है: मासूम और शैतान, टिकाऊ और क्षणिक, ज़मीन के नीचे और ज़मीन के ऊपर। प्रदर्शक अपनी यात्रा भी सुनाते हैं:
के साथ पहली सभा में आलू के बारे में बात करने के बाद कविता और चलचित्र को जोड़ने, शोध से कहानी निकालने का निर्णय लिया।

- : " ,- , , "- — , , , ? , ; , - , , -